

जैव विविधता और पर्यावरण शिक्षा

डॉ. सरोज राय

सहायक आचार्या, शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनू-राजस्थान

जैव विविधता जीवन और विविधता के संयोग से निर्मित शब्द है जो आमतौर पर पृथ्वी पर मौजूद जीवन की विविधता और परिवर्तनशीलता को संदर्भित करता है। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यू.एन.ई.पी) के अनुसार जैव विविधता विशिष्टतया आनुवंशिक, प्रजाति तथा पारिस्थितिक तंत्र के विविधता का स्तर मापता है। जैव विविधता एक प्राकृतिक संसाधन है जिससे हमारी जीवन की सम्पूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। जैव विविधता शब्द का प्रयोग वन्य जीवन वैज्ञानिक और संरक्षणवादी रेमंड एफ. डैसमैन द्वारा 1968 ई. में "डिफरेंट काइड ऑफ कंट्री पुस्तक में किया था। जैव विविधता प्रायः प्रजाति विविधता और प्रजाति समृद्धता जैसे पदों के स्थान पर प्रयुक्त होती है। इसको किसी क्षेत्र में गुणसूत्र प्रजाति तथा पारिस्थिकी की समग्रता के रूप में समझा जाता है।

जैव विविधता जीवों के बीच पायी जाने वाली विभिन्नता है जो कि प्रजातियों में प्रजातियों के बीच और पारितन्त्रों की विविधता को समाहित करती है, आनुवंशिक विविधता, प्रजातीय विविधता, पारितन्त्र विविधता। प्रजातियों में पायी जाने वाली आनुवंशिक विभिन्नता प्रजातियों में पायी जाने वाली प्रजातीय विविधता, जिसका किसी भी विशेष समुदाय अथवा पारितन्त्र (इकोसिस्टम) के उचित कार्य के लिए प्रजातीय विविधता का होना अनिवार्य होता है। पारितन्त्र विभिन्नता में प्रजातियों का निवास होता है। जैव विविधता का मानव जीवन में महत्वपूर्ण योगदान होता है। जैव विविधता के बिना पृथ्वी पर मानव जीवन असम्भव है।

जैव विविधता पर्यावरण प्रदूषण के निस्तारण में सहायक होती है। प्रदूषकों का विघटन तथा उनका अवशोषण उसकी विशेषता होती है। जैव विविधता में प्रमुख अवशोषक होता है। जो वैश्विक तपन के लिए उत्तरदायी है जिससे वैश्विक तापमान में निरन्तर वृद्धि हो रही है।

किसी भी जीव या जन्तु के रहन-सहन उसके खान-पान और उसकी दृष्टि दूसरे जीव जन्तुओं से अलग होती है उसे जैव विविधता कहते हैं। किसी विशेष समय में किसी विशेष स्थान पर दो या दो से अधिक प्रजातियों का पाया जाना जैव विविधता है। अगर किसी विशेष समय पर किसी विशेष स्थान पर बहुत सारी प्रजातियां होती हैं। उन सबकी अलग-अलग विभिन्नताएं होती हैं वो वैश्विक जैव विविधता होती है। किसी विशेष पारिस्थितिकी तंत्र में जीवों में जो विभिन्नताएं पाई जाती हैं पारिस्थितिक जैव विविधता कहते हैं।

वर्तमान में जैव विविधता क्षरण के कारण :

1. पर्यावरण प्रदूषण
2. आवास विनाश

3. विदेशी मूल की वनस्पतियों का आक्रमण
4. जैविक संसाधनों का दोहन
5. शिकार एवं वन विनाश
6. अति चराई एवं बीमारी
7. प्रतियोगी अथवा परभक्षी प्रजातियों का प्रवेश
8. आवास विखण्डन
9. प्राकृतिक आपदाएं एवं जलवायु परिवर्तन
10. विश्व तापमान में वृद्धि
11. औद्योगिक कृषि
12. जनसंख्या वृद्धि
13. उन्नत प्रजातियों का आगमन एवं उनका उपयोग
14. सामान्यजन में सूचना एवं ज्ञान का अभाव
15. जैविक विविधता के संरक्षण के लिए योजना एवं नीतियों का अभाव

जैव विविधता संरक्षण की आवश्यकता :

1. जैविक विविधता पारिस्थितिकी तंत्र को स्थायित्व प्रदान करती है।
2. यह हमें भोजन, आवास और कपड़ा उपलब्ध कराती है।
3. जैविक विविधता हमारे व्यक्तित्व में नयापन लाती है, स्वस्थ रखती है तथा पारम्परिक शैलियों से सम्बन्ध बनाये रखती है।
4. आर्थिक सम्पन्नता में वृद्धि करती है।
5. पृथ्वी को स्वच्छ, स्वस्थ एवं सुरक्षा प्रदान करती है।

संरक्षण के सुझाव :

1. उन प्रजातियों का संरक्षण होना चाहिए जो कि संकटग्रस्त हैं।
2. विलुप्ति पर रोक के लिए उचित योजना तथा प्रबन्धन की आवश्यकता।
3. खाद्य फसलों, चारा पौधों, मवेशियों, जानवरों उनके जंगली रिश्तेदारों को संरक्षित किया जाना चाहिए।
4. प्रत्येक देश की वन्य प्रजातियों के आवास के निश्चित कर उनकी सुरक्षा को सुनिश्चित करना।
5. उन आवासों को सुरक्षा प्रदान करना जो प्रजातियां भोजन, प्रजनन तथा बच्चों के पालन पोषण करती हैं।
6. जंगली पौधों तथा जन्तुओं के अन्तःकेन्द्रिय व्यापार पर नियंत्रण होना चाहिए।
7. वनस्पतियों एवं जन्तुओं की प्रजातियों एवं उनके आवास को बचाने लिए समयबद्ध कानून को लागू करनी की आवश्यकता है जिससे जैव विविधता को बढ़ावा मिल सके।